रिसर्च पेपर नंबर 11 (ریسرچ پیپر نمبر ۱۱)

सहीह इस्लामी अकाइद (صحیح اسلامی عقائد)

1- कुरआन हकीम को समझे बगैर अपने अकाइद और नज़रियात बनाना सरासर गुमराही है (पेज नंबर 2)

2- अल्लाह के नज़दीक न काबिले माफ़ी जुर्म और सबसे बड़ा गुनाह शिर्क है (पेज नंबर 6)

3- तमाम मखलुकात का मुश्किलकुशा और हाजतरवा सिर्फ एक अल्लाह ही है (पेज नंबर 17)

4- अल्लाह और उसके रसूल के अलावा इस्लाम में कोई और शक्सियत दलील और हुज्जत नहीं है (पेज नंबर 25)

कुरआन हकीम को समझे बगैर अपने अकाइद और नज़रियात बनाना सरासर गुमराही है

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿22﴾

यक़ीनन हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है, पस क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला ? (अल-क़मर 54:22)

كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِّيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿29﴾

ये बाबरकत किताब है जिसे हमने आपकी तरफ़ इसलिए नाज़िल फ़रमाया कि लोग इसकी आयतों पर ग़ौरो फ़िक्र करें और अक़्लमंद इससे नसीहत हासिल करें (साद 38:29)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿170﴾

और इनसे जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह तआला की उतारी हुई किताब की ताबेदारी करो तो जवाब देते हैं कि हम तो उस तरीक़े की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादाओ को पाया , अगरचे उन के बाप दादा कुछ भी न समझते हों और न राहे रास्त ही पर चलते रहे हों (अल-बक़रह 2:170)

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿269﴾

वो जिसे चाहे हिक्मत और दानाई देता है और जिस शख़्स को हिक्मत और समझ दिया जाए वो बहुत सारी भलाई दिया गया और नसीहत सिर्फ़ अक़्लमंद ही हासिल करते हैं। (अल-बक़रह 2:269)

وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿116﴾

और दुनिया में ज़्यादा लोग ऐसे हैं कि अगर आप उनका कहना मानने लगें तो वो आपको अल्लाह की राह से बेराह कर दें, वो महज़ बेअसल ख़्यालात पर चलते हैं और बिल्कुल क़यासी बातें करते हैं।(अल-अनआम 6:116)

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿27﴾ يَا وَيْلَتَىٰ لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ﴿28﴾ لَّقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۗ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنسَانِ خَذُولًا ﴿29﴾ وَقَالَ الرَّسُولُ يَا رَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَٰذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ﴿30﴾

और इस दिन ज़ालिम शख़्स अपने हाथों को चबा चबा कर कहेगा, हाए काश कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की राह इख़्तियार की होती। हाए अफ़सोस काश कि मैंने फ़लां को दोस्त नही बनाया होता। इसने तो मुझे इसके बाद गुमराह कर दिया कि नसीहत मेरे पास आ पहुंची थी और शैतान तो इन्सान को (वक़्त पर) दग़ा देने वाला है। और रसूल ﷺ कहेंगे कि ऐ मेरे परवरदिगार! बेशक मेरी उम्मत इस क़ुरआन को छोड़ रखा था। (अल-फ़ुरकान 25: 27-30)

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ﴿73﴾

और जब इन्हें इनके रब के कलाम की आयतें सुनाई जाती हैं तो वो अंधे बहरे होकर इन पर नहीं गिरते।(अल-फ़ुरकान 25: 73)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿20﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿21﴾ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِندَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿22﴾ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَّأَسْمَعَهُمْ ۖ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوا وَّهُم مُّعْرِضُونَ ﴿23﴾

ऐ ईमान वालो! अल्लाह का और उसके रसूल का कहना मानो और उस (का कहना मानने) से रुगर्दानी मत करो, सुनते जानते हुए। और तुम उन लोगों की तरह मत होना जो दावा तो करते हैं कि हमने सुन लिया हालाँकि वो सुनते (सुनाते कुछ) नहीं। बेशक बदतरीन ख़लाइक़ (सृष्टि) अल्लाह तआला के नज़दीक वो लोग हैं, जो बहरे हैं, गूंगे हैं, जो (ज़रा) नहीं समझते। और अगर अल्लाह तआला उनमें कोई ख़ूबी देखता तो उनको सुनने की तौफ़ीक़ दे देता और अगर उनको अब सुना दे तो ज़रूर रुगर्दानी करेंगे, बेरुख़ी करते हुए। (अल-अन्फाल 8: 20-23)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿21﴾

और जब इनसे कहा जाता है कि अल्लाह की उतारी हुई वही की ताबेदारी करो तो कहते हैं कि हमने तो जिस तरीक़ पर अपने बाप दादा ओ को पाया है उसी की ताबेदारी करेंगे, अगरचे शैतान इनके बड़ों को दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता हो (लुक़मान 31:21)

وَمَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ﴿28﴾

हालाँकि इन्हें इसका कोई इल्म नहीं वो सिर्फ़ अपने गुमान के पीछे पड़े हुए हैं और बेशक वहम (गुमान) हक़ के मुक़ाबले में कुछ काम नहीं देता।(अन नजम 53:28)

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿179﴾

और हमने ऐसे बहुत से जिन्न और इंसान दोज़ख़ के लिए पैदा किए हैं , जिनके दिल ऐसे हैं जिनसे नहीं समझते और जिनकी आंखें ऐसी हैं जिनसे नहीं देखते और जिनके कान ऐसे हैं जिनसे नहीं सुनते। यह लोग चौपायों की तरह हैं बल्कि ये इनसे भी ज़्यादा गुमराह हैं। यही लोग ग़ाफ़िल हैं। (अल अराफ़ 7:179)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُم مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿57﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿58﴾

ऐ लोगों! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक ऐसी चीज़ आई है जो नसी हत है और दिलों में जो रोग हैं उस के लिए शिफ़ा है और रहनुमाई करने वाली है और रहमत है ईमान वालों के लिए । आप कह दीजिए कि बस लोगों को अल्लाह के इस ई नाम और रहमत पर ख़ुश होना चाहिए , यह उससे बदर्जहा बेहतर जो वह जमा कर रहे हैं। (यूनुस 10:58)

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ﴿9﴾ وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿10﴾

यक़ीनन ये क़ुरआन वो रास्ता दिखाता है जो वहुत ही सीधा है, और ईमान वालों को जो नेक आमाल करते हैं, इस बात की ख़ुशख़बरी देता है कि उनके लिए बहुत बड़ा अज्र है। और ये कि जो लोग आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते उनके लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (बनी इस्राईल 17:9-10)

وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿54﴾ وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿55﴾ أَن تَقُولَ نَفْسٌ يَا حَسْرَتَىٰ عَلَىٰ مَا فَرَّطتُ فِي جَنبِ اللَّهِ وَإِن كُنتُ لَمِنَ السَّاخِرِينَ ﴿56﴾ أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿57﴾ أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿58﴾ بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿59﴾

तुम(सब) अपने परवरदिगार की तरफ़ झुक पड़ो और इसकी हुक्म बर्दारी किए जाओ इससे क़ब्ल कि तुम्हारे पास अज़ाब आ जाए और फिर तुम्हारी मदद ना की जाए। और पैरवी करो इस बेहतरीन चीज़ की जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारी तरफ नाज़िल की गई है, इससे पहले कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें खबर भी ना हो। (ऐसा ना हो कि) कोई शख़्स कहे हाए अफ़्सोस! इस बात पर कि मैंने अल्लाह तआला के हक़ में कोताही की बल्कि मैं तो मज़ाक़ उड़ाने वालों में ही रहा। या कहे कि अग र अल्लाह मुझे हिदायत करते तो मैं भी पारसा लोगों में होता। या अज़ाब को देख कर कहे काश ! कि किसी तरह मेरा लौट जाना हो जाता तो मैं भी नेकोकारों में हो जाता। हां (हां) बेशक तेरे पास मेरी आयतें पहुंच चुकी थीं जिन्हें तूने झुठलाया और गुरूर व तकब्बुर किया और तू था काफ़िरों में। (अज़ज़ुम्र 39:54-59)

वापस लिस्ट पर जाने के लिए यहाँ क्लिक करें

अल्लाह के नज़दीक न काबिले माफ़ी जुर्म और सबसे बड़ा गुनाह शिर्क है

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ﴿5﴾

हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझसे मदद चाहते हैं।(फातिहा 1:4)

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ اللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِّلَّهِ ۗ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ﴿165﴾

बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के शरीक औरों को ठहरा कर उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं , जैसी मुहब्बत अल्लाह से होनी चाहिए और ईमान वाले अल्लाह की मुहब्बत में बहुत सख़्त होते हैं, काश कि मुशरिक लोग जानते जबकि अल्लाह के अज़ाब को देख कर (जान लेंगे) कि तमाम ताक़त अल्लाह ही को है और अल्लाह तआला सख़्त अज़ाब देने वाला है (तो हरगिज़ शिर्क ना करते)।(अल-बक़रह 2:165)

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿116﴾

इसे अल्लाह तआला क़तअन ना बख़्शेगा कि इसके साथ शरीक मुक़र्रर किया जाए, हां शिर्क के अलावा गुनाह जिसके चाहे माफ़ फ़रमा देता है और अल्लाह के साथ शरीक करने वाला बहुत दूर की गुमराही में जा पड़ा।(अन निसा 4:116)

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِّي مِن دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِن كُونُوا رَبَّانِيِّينَ بِمَا كُنتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا كُنتُمْ تَدْرُسُونَ ﴿79﴾ وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَن تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا ۚ أَيَأْمُرُكُم بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿80﴾

किसी ऐसे इंसान को जिसे अल्लाह तआला किताब व हिक्मत और नबुवत दे, ये लाइक़ नहीं कि फिर भी वो लोगों से कहे कि तुम अल्लाह तआला को छोड़ कर मेरे बंदे बन जाओ, बल्कि वो तो कहेगा कि तुम सब रब के हो जाओ, तुम्हारे किताब सिखाने के बाइस और तुम्हारे किताब पढ़ने

के सबब। और ये नहीं (हो सकता) कि वो तुम्हें फ़रिश्तों और नबियों को रब बना लेने का हुक्म करे, क्या वह तुम्हारे मुसलमान होने के बाद भी तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा ।(आले इमरान 3:79-80)

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ الْمَسِيحُ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ ﴿72﴾

बेशक वो लोग काफ़िर हो गए जिनका क़ौल है कि मसीह इब्ने मरियम ही अल्लाह है , हालाँकि ख़ुद मसीह ने इनसे कहा था कि ऐ बनी इस्राईल ! अल्लाह ही की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा सबका रब है, यक़ीन मानो कि जो शख़्स अल्लाह के साथ शरीक करता है , अल्लाह तआला ने इस पर जन्नत हराम की दी है , उसका ठिकाना जहन्नम ही है और गुनाहगारों की मदद करने वाला कोई नहीं होगा।(अल माइदह 5:72)

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ ۚ إِن كُنتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۚ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿116﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿117﴾ إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿118﴾ قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿119﴾ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿120﴾

और वो वक़्त भी क़ाबिले ज़िक्र है जबकि अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि ऐ ईसा इब्ने मरियम ! क्या तुमने इन लोगों से कह दिया था कि मुझको और मेरी मां को भी अलावा अल्लाह के माबूद क़रार देलो! ईसा अर्ज़ करेंगे कि मैं तो तुझको मंज़ह समझता हूं, मुझको किसी तरह ज़ेबा ना था कि मैं ऐसी बात कहता जिसके कहने का मुझको कोई हक़ नहीं, अगर मैंने कहा होगा तो तुझको इसका इल्म होगा। तो तू मेरे दिल के अंदर की बात भी जानता है और मैं तेरे नफ़्स में जो कुछ है इसको नहीं जानता। तमाम ग़ैबो का जानने वाला तू ही है। मैंने तो इनसे और कुछ नहीं कहा

मगर सिर्फ़ वही जो तूने मुझसे कहने को फ़रमाया था कि तुम अल्लाह की बंदगी इख़्तियार करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है। मैं इन पर गवाह रहा जब तक इनमें रहा। फिर जब तूने मुझको उठा लिया तो तू ही इन पर निगरा रहा। और तू हर चीज़ की पूरी ख़बर रखता है। अगर तू इनको सज़ा दे तो ये तेरे बंदे हैं और अगर तू इनको माफ़ फ़रमा दे तो तू जबरदस्त है हिक्मत वाला है। अल्लाह इर्शाद फ़रमाएगा कि यह वो दिन है कि जो लोग सच्चे थे उनका सच्चा होना उनके काम आएगा , उनको बाग़ मिलेंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी जिनमें वो हमेशा हमेशा को रहेंगे। अल्लाह तआला उनसे राज़ी और ख़ुश और ये अल्लाह से राज़ी और ख़ुश हैं, ये बड़ी (भारी) कामयाबी है। अल्लाह ही की है सल्तनत आसमानों की और ज़मीन की और इन चीज़ों की जो इनमें मौजूद हैं और वो हर शैए पर पूरी क़ुदरत रखता है।(अल माइदह 5:116-120)

قُل لَّا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۚ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿50﴾

आप कह दीजिए कि ना तो मैं तुमसे ये कहता हूं कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और ना मैं ग़ैब जानता हूं और ना मैं तुमसे ये कहता हूं कि मैं फ़रिशता हूं। मैं तो सिर्फ़ जो कुछ मेरे पास वही आती है इसका इत्बाअ करता हूं , आप कहिए कि अंधा और बीना (जिसको दिखाई दे) कहीं बराबर हो सकता है। सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (अल अनआम 6:50)

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۗ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿14﴾ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿15﴾ مَّن يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿16﴾

आप कहिए कि अल्लाह के सिवा 'जो आसमानों और ज़ मीन का पैदा करने वाला है और जो खाने को देता है और उसको कोई खाने को नहीं देता ' और किसी को माबूद क़रार दू । आप फ़रमा दीजिए कि मुझको यह हुक्म हुआ है कि सबसे पहले मैं इस्लाम क़बूल करूं और तू मुशरिकीन में से हरगिज़ ना होना। आप कह दीजिए कि मैं अगर रब का कहना ना मानूं तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूं। जिस शख़्स से उस रोज़ वो अज़ाब हटा दिया जाए तो उस पर अल्लाह ने बड़ा रहम किया और ये सरीह कामयाबी है।(अल अनआम 6:14-16)

ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِۚ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿88﴾

अल्लाह की हिदायत ही है जिसके ज़रिये अपने बंदों में से जिसको चाहे हिदायत करता है और अगर बिल्फर्ज़ ये हज़रात (अम्बिया) भी शिर्क करते तो जो कुछ ये अमाल करते थे वो सब अकारत हो जाते।(अल अनआम 6:88)
(इस आयत से पहले 18 अम्बिया किराम का ज़िक्र गुज़र चुका है)

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِۚ قُل لَّا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْۙ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿56﴾

आप कह दीजिए कि मुझको इससे मना किया गया है कि उनकी इबादत करूं जिनको तुम लोग अल्लाह तआला को छोड़ कर पुकारते हो। आप कह दीजिए कि मैं तुम्हारी ख़्वाहिशात की इत्बाअ ना करूंगा क्योंकि इस हालत में तो मैं तो बेराह हो जाउंगा और राहे रास्त प र चलने वालों में ना रहूंगा।(अल अनआम 6:56)

وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿59﴾

और अल्लाह तआला ही के पास हैं ग़ैब की कुंजियां (ख़ज़ाने), उनको कोई नहीं जानता सिवाय अल्लाह के। और वो तमाम चीजों को जानता है जो कुछ खुश्की में हैं और जो कुछ दरयाओं में हैं और कोई पता नहीं करता मगर वो इसको भी जानता है , और कोई दाना ज़मीन के तारीक हिस्सों में नहीं पड़ता और ना कोई तर और ना कोई ख़ुश्क चीज़ गिरती है मगर ये सब किताब मुबीन में हैं।(अल अनआम 6:59)

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿82﴾

जो लोग ईमान रखते हैं और अपने ईमान को ज़ुल्म (शिर्क) के साथ मख़लूत नहीं करते, ऐसों ही के लिए अम्न है और वही राहे रास्त पर चल रहे हैं।(अल अनआम 6:82)

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿161﴾ قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿162﴾ لَا شَرِيكَ لَهُ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿163﴾

आप कह दीजिए कि मुझको मेरे रब ने एक सीधा रास्ता बता दिया है कि वो एक दीन ए मुस्तहिकम है, जो तरीक़ा है इब्राहीम का जो अ ल्लाह की तरफ़ यक्सू थे और वो शिर्क करने वालों में से न ही थे। आप फ़रमा दीजिए कि यक़ीनन मेरी नमाज़ और मेरी सारी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना ये सब ख़ालिस अल्लाह ही का है जो सारे जहां का मालिक है। इसका कोई शरीक नहीं और मुझको इसी का हुक्म हुआ है और मैं सब मानने वालों में से पहला हूं।(6:161-163)

اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿31﴾

इन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर अपने आलिमों और दरवेशो को रब बनाया है । और मरियम के बेटे मसीह को हालाँकि इन्हें सिर्फ़ एक अकेले अल्लाह ही की इबादत का हुक्म दिया गया था जिसके सिवा कोई माबूद नहीं वो पाक है इनके शरीक मुक़र्रर करने से।(अत्तौबह 9:31)

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ ۙ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا ائْتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَٰذَا أَوْ بَدِّلْهُ ۚ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِن تِلْقَاءِ نَفْسِي ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۖ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿15﴾ قُل لَّوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُم بِهِ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿16﴾

और जब इनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती है जो बिल्कुल साफ़ साफ़ हैं तो ये लोग जिनको हमारे पास आने की उम्मीद नहीं है यूं कहते हैं कि इसके सिवा कोई दूसरा क़ुरआन लाओ या इसमें कुछ तरमीम कर दीजिए। आप यूं कह दीजिए कि मुझे ये हक़ नहीं कि मैं अपनी तरफ़ से इसमें तरमीम कर दूं । बस मैं तो उसी का इत्बाअ करूंगा जो मेरे पास वही के ज़रिये से पहुंचा है, अगर मै अपने रब की ना फ़रमानी करूं तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब का अंदेशा रखता हूं। आप यूं कह दीजिए कि अगर अल्लाह तआला को मंज़ूर होता तो ना मैं तुमको वो पढ़ कर सुनाता और ना अल्लाह तआला तुमको इसकी इतला देता क्योंकि मैं इससे पहले तो एक बड़े हिस्से उम्र तक तुम में रह चुका हूं। फिर क्या तुम अक़्ल नहीं रखते।(यूनुस 10:15-16)

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنتُمْ فِي شَكٍّ مِّن دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ ۖ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿104﴾ وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿105﴾

आप कह दीजिए कि ऐ लोगो! अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ से शक में हो तो मैं उन माबूदों की इबादत नहीं करता जिनकी तुम अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो, लेकिन हां उस अल्लाह की इबादत करता हूं जो तुम्हारी जान क़ब्ज़ करता है। और मुझको ये हुक्म हुआ है कि मैं ईमान लाने वालों में से हूं। और ये कि अपना रुख़ यक्सू होकर (इस) दीन की तरफ़ कर लेना, और कभी मुशरिकों में से ना होना। (यूनुस 10:104-105)

قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَن يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَن يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿31﴾ فَذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۖ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ ۖ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ﴿32﴾

आप कहिए कि वो कौन हैं जो तुमको आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ पहुंचाता है या वो कौन है जो कानों और आंखों पर पूरा इख़्तियार रखता है और वो कौन है जो ज़िंदा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िंदा से निकालता है और वो कौन है जो तमाम कामों की तदबीर करता है ? ज़रूर वो यही कहेंगे कि “अल्लाह” तो इनसे कहिए कि फिर क्यों नहीं डरते। सो ये है अल्लाह तआला जो तुम्हारा हक़ीक़ी रब है। फिर हक़ के बाद और क्या रह ग या सिवाय गुमराही के, फिर कहां फिरे जाते हो?(यूनुस 10:31-32)

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ آلِهَةً ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۖ هَٰذَا ذِكْرُ مَن مَّعِيَ وَذِكْرُ مَن قَبْلِي ۗ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ ۖ فَهُم مُّعْرِضُونَ ﴿24﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿25﴾ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿26﴾ لَا يَسْبِقُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُم بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ﴿27﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَهُم مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿28﴾ وَمَن يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَٰهٌ مِّن دُونِهِ فَذَٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿29﴾

क्या उन लोगों ने अल्लाह के सिवा और माबूद बना रखे हैं , इनसे कह दो 'लाओ अपनी दलील पेश करो। ये है मेरे साथ वालों की किताब और मुझसे अगलों की दलील'। बात ये है कि इनमें के अक्सर लोग हक़ को नहीं जानते इसी वजह से मुंह मोड़े हुए हैं। तुझसे पहले भी जो रसूल हमने भेजा उ सकी तरफ़ यही वही नाज़िल फ़रमाई कि मेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं पस तुम सब मेरी ही इबादत करो। (मुशरिक लोग) कहते हैं कि 'रहमान औलाद वाला है' (ग़लत है) उसकी ज़ात पाक है , बल्कि वो सब इसके बाइज़्ज़त बंदे हैं (यानी फ़रिश्ते और अम्बिया) । किसी बात में अल्लाह पर पैश दस्ती नहीं करते बल्कि उसके फ़रमान पर कारबंद हैं। वो इनके आगे पीछे तमाम उमूर से वाक़िफ़ है वो किसी की भी सिफ़ारिश नहीं करते सिवाय उनके जिनसे अल्लाह ख़ुश हो वो तो ख़ुद हैबत ए इलाही से लर्ज़ां व तर्सां हैं। इनमें से अगर कोई भी कह दे कि अल्लाह के सिवा मैं इबादत के लायक हूं तो हम उसे दोज़ख़ की सज़ा दें , हम ज़ालिमों को इसी तरह सज़ा देते हैं।(अल अम्बिया 21:24-29)

حُنَفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِۦ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ﴿31﴾

अल्लाह की तौहीद को मानते हुए इसके साथ किसी को शरीक ना करते हुए। सु नो अल्लाह के साथ शरीक करने वाला गोया आसमान से गिर पड़ा , अब या तो इसे परिंदे उचक ले जाएंगे या हवा किसी दूर दराज़ की जगह फेंक देगी।(अल हज 22:31)

قُل لِّمَنِ الْأَرْضُ وَمَن فِيهَا إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿84﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿85﴾ قُلْ مَن رَّبُّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿86﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿87﴾ قُلْ مَن بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿88﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴿89﴾ بَلْ أَتَيْنَاهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿90﴾ مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِن وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَٰهٍ ۚ إِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ إِلَٰهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿91﴾

पूछिए तो सही कि ज़मीन और इसकी कुल चीज़ें किसकी हैं ? बतलाओ अगर जानते हो ? फ़ौरन जवाब देंगे कि अल्लाह की, कह दीजिए कि फिर तुम नसीहत क्यों नहीं हासिल करते। दर्याफ़्त कीजिए कि सातों आसमानों का और बहुत बाअज़्मत अर्श का रब कौन है ? वो लोग जवाब देंगे

कि अल्लाह ही है। कह दीजिए कि फिर तुम क्यों नहीं डरते ? पूछिए कि तमाम चीज़ों का इख़्तियार किसके हाथों हाथ में है ? जो पनाह देता है और जिसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दिया जाता, अगर तुम जानते हो बतला दो? यही जवाब देंगे कि अल्लाह ही है। कह दीजिए फिर तुम किधर से जादू कर दिए जाते हो ? हक़ ये है कि हमने इन्हें हक़ पहुंचा दिया है और ये बेशक झूठे हैं। ना तो अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया और ना इसके साथ और कोई माबूद है , वर्ना हर माबूद अपनी मख़्लूक़ को लिए फिरता और हर एक दूसरे पर चढ़ दौड़ता जो औसाफ़ ये बतलाते हैं इनसे अल्लाह पाक (और बेनियाज़) है।(अल मोमिनून 23: 84-91)

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهُ تَقْدِيرًا ﴿2﴾ وَاتَّخَذُوا مِن دُونِهِ آلِهَةً لَّا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ لِأَنفُسِهِمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَاةً وَلَا نُشُورًا ﴿3﴾

उसी अल्लाह की सल्तनत है आसमानों और ज़मीन की और वो कोई औलाद नहीं रखता , ना उसकी सल्तनत में कोई उसका साझी है और हर चीज़ को उसने पैदा करके एक मुनासिब अंदाज़ा ठहरा दिया है। इन लोगों ने अल्लाह के सिवा जिन्हें अपने माबूद ठहरा रखा हैं वो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वो ख़ुद पैदा किए जाते हैं , ये तो अपनी जान के नुक़्सान नफ़ा का भी इख़्तियार नहीं रखते और ना मौत व हयात के और ना दोबारा जी उठने के वो मालिक हैं। (अल फ़ुरकान 25:2-3)

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ﴿17﴾ قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنبَغِي لَنَا أَن نَّتَّخِذَ مِن دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِن مَّتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ﴿18﴾ فَقَدْ كَذَّبُوكُم بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَن يَظْلِم مِّنكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿19﴾

और जिस दिन अल्लाह तआला इन्हें और सिवाए अल्लाह के जिन्हें ये पूजते रहे , उन्हें जमा करके पूछेगा कि क्या मेरे इन बन्दों को तुमने गुमराह किया या ये ख़ुद ही राह से गुम हो गए।(फ़रिश्ते और अम्बिया) वो जवाब देंगे कि तेरी ज़ात पाक है ख़ुद हमें ही ये ज़ैबा ना था कि तेरे सिवा दुसरो को अपना कार साज़ बनाते, बात ये है कि तूने इन्हें और इनके बाप दादाओ को

बहुत सामान ए ज़िन्दगी अता फ़रमाया यहां तक कि वो नसीहत भुला बैठे , ये लोग थे ही हलाक होने वाले। तो इन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी तमाम बातों में झुटलाया , अब ना तो तुम में अज़ाबों के फैरने की ताक़त है, ना मदद करने की, तुम में से जिस जिस ने ज़ुल्म किया है हम इसे बड़ा अज़ाब चखाएंगे।(अल फ़ुरकान 25:17-19)

أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۚ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ﴿3﴾

ख़बरदार! अल्लाह तआला के ही लिए ख़ालिस इबादत करना है और जिन लोगों ने उ सके सिवा औलिया बना रखे हैं (और कहते हैं) कि हम इनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि ये (बुज़ुर्ग) अल्लाह की नज़दीकी के मर्तबा तक हमारी रसाई करा दें, ये लोग जिस बारे में मतभेद कर रहे हैं इसका (सच्चा) फ़ैसला अल्लाह (ख़ुद) करेगा। झूठे और ना शुकरे (लोगों) को अल्लाह तआला राह नहीं दिखाता। (अज़्ज़ुमर 39:3)

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَّا كَانَ لَكُمْ أَن تُنبِتُوا شَجَرَهَا ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿60﴾ أَمَّن جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَالَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿61﴾ أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿62﴾ أَمَّن يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَن يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿63﴾ أَمَّن يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿64﴾ قُل لَّا يَعْلَمُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ﴿65﴾

भला बतओ तो ? कि आसमानों को और ज़मीन को किसने पैदा किया ? किसने आसमान से बारिश बरसाई? फिर इससे भरे बारौनक़ बाग़ात उगा दिए? इन बागों के दरख़्तों को तुम हरगिज़ ना उगा सकते, क्या अल्लाह के साथ और कोई माबूद भी है ? बल्कि यह लोग (सीधी राह से) हट जाते हैं। क्या वो जिसने ज़मीन को क़रारगाह बनाया और इसके दर्मियान नहरें जारी कर दीं

और इसके लिए पहाड़ बनाए और दो समन्दरों के दर्मियान रोक बना दी , क्या अल्लाह के साथ और कोई माबूद भी है ? बल्कि इनमें से अक्सर कुछ जानते ही नहीं। बे कस की पुकार को जब वो पुकारे, कौन क़बूल करके सख़्ती को दूर कर देता है ? और तुम्हें ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाता है, क्या अल्लाह तआला के साथ और माबूद है ? तुम बहुत कम नसीहत व इबरत हासिल करते हो। क्या वो जो तुम्हें ख़ुश्की और तरी की तारीकियों में राह दिखाता है और जो अपनी रहमत से पहले ही ख़ुश ख़बरियां देने वाली हवाएं चलाता है , क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद भी है जिन्हें ये शरीक करते हैं इन सबसे अल्लाह बुलंद व बालातर है। क्या वो जो मख़्लूक़ की अवल दफ़ा पैदाइश करता है फिर इसे लौटाएगा और जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रोज़ियां दे र हा है, क्या अल्लाह तआला के साथ कोई और माबूद है ? कह दीजिए कि अगर सच्चे हो तो अपनी दलील लाओ। कह दीजिए कि आसमानों वालों में से ज़मीन वालों में से सिवाए अल्लाह के कोई ग़ैब नहीं जानता , इन्हें तो ये भी नहीं मालूम कि कब उठा खड़ा किए जाएंगे ? (अन नमल 27:60-65)

يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ﴿6﴾ الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ﴿7﴾ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ﴿8﴾

ऐ इंसान! तुझे अपने रब ए करीम से किस चीज़ ने बहकाया ? जिस (रब ने) तुझे पैदा किया, फिर ठीक ठाक किया , फिर (दुरुस्त और) बराबर बनाया। जिस सूरत में चाहा तुझे जोड़ दिया। (अल इन्फ़ितार 82:6-8)

وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَا بُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿13﴾

और जबकि लुक़्मान ने वाज़ कहते हुए अपने लड़के से फ़रमाया कि मेरे प्यारे बच्चे! अल्लाह के साथ शरीक ना करना बेशक शिर्क बड़ा भारी ज़ुल्म है। (लुक़्मान 31:13)

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّينَ ﴿11﴾ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ﴿12﴾ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿13﴾ قُلِ اللَّهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُ دِينِي ﴿14﴾

आप कह दीजिए! कि मुझे हुक्म दिया गया है कि अल्लाह तआला की इस तरह इबादत करूं कि उसी के लिए इबादत को ख़ा लिस करलूं। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहला फ़र्मांबर्दार बन जाऊं। कह दीजिए! कि मुझे तो अपने रब की ना फ़रमानी करते हुए बड़े दिन के

अज़ाब का ख़ौफ़ लगता है। कह दीजिए! कि मैं तो ख़ालिस करके सिर्फ़ अपने रब ही की इबादत करता हूं। (अज़्ज़ुमर 39:11-14)

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿45﴾

जब अल्लाह अकेले का ज़िक्र किया जाए तो उन लोगों के दिल नफ़रत करने लगते हैं जो आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते और जब उसके सिवा (और का) ज़िक्र किया जाए तो इनके दिल खुल कर ख़ुश हो जाते हैं। (अज़्ज़ुमर 39:45)

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿62﴾ لَّهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿63﴾ قُلْ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَأْمُرُونِّي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ ﴿64﴾ وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿65﴾ بَلِ اللَّهَ فَاعْبُدْ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ ﴿66﴾

अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ पर निगाहबान है। आसमानों और ज़मीन की कुंजियों का मालिक वही है , जिन जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इंकार किया वही ख़सारा पाना वाले हैं। आप कह दीजिए 'ऐ जाहिलों! क्या तुम मुझसे अल्लाह के सिवा औरों की इबादत को कहते हो '। यक़ीनन तुम्हारी तरफ़ भी और तुम से पहले (के तमाम नबियों) की तरफ़ भी वही की गई है कि अगर तुमने शिर्क किया तो बिलाशुबा ह तुम्हारा अमल ज़ाए हो जाएगा और बिलयक़ीन तुम खासारे में रहोगे। बल्कि तुम अल्लाह ही की इबादत करो और शुक्र करने वालों में से हो जाओ ।(अज़्ज़ुमर 39:62-66)

वापस लिस्ट पर जाने के लिए यहाँ क्लिक करें

तमाम मखलुकात का मुश्किलकुशा और हाजतरवा सिर्फ एक अल्लाह ही है

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ﴿5﴾

हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझसे ही मदद चाहते हैं(अल फातिहा 1:5)

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿186﴾

जब मेरे बंदे मेरे बारे में आपसे सवाल करें तो आप कह दें कि मैं बहुत ही क़रीब हूं हर पुकारने वाले की पुकार को जब कभी वो मुझे पुकारे , क़बूल करता हूं इसलिए लोगों को भी चाहिए कि वो मेरी बात मान लिया करें और मुझ पर ईमान रखें, यही इनकी भलाई का बाइस है। (अल बक़रह 2:186)

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ﴿56﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ﴿57﴾

कह दीजिए कि अल्लाह के सिवा जिन्हें तुम माबूद कह रहे हो इन्हें पुकारो लेकिन ना तो वो तुमसे किसी तक्लीफ़ को दूर कर सकते हैं और ना बदल सकते हैं। जिन्हें यह लोग पुकारते हैं ख़ुद वो अपने रब के तकर्रुब की जुस्तजू में रहते हैं कि इनमें से कौन ज़्यादा नज़दीक हो जाए वो ख़ुद इसकी रहमत की उम्मीद रखते हैं और इसके अज़ाब से ख़ौफ़ज़दह रहते हैं , (बात भी यही है) कि तेरे रब का अज़ाब डरने की चीज़ ही है।(बनी इस्राईल 17:56-57)

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۖ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُم مِّن ظَهِيرٍ ﴿22﴾

कह दीजिए! कि अल्लाह के सिवा जिन जिन का तुम्हें गुमान है (सब) को पुकार लो, ना इन में से किसी को आसमानों और ज़मीनों में से एक ज़र्रा का इख़्तियार है ना इनमें कोई हिस्सा है ना इनमें से कोई अल्लाह का मददगार है। (सबा 34:22)

مَّا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ انظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿75﴾ قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿76﴾

मसीह इब्ने मरियम सिवा पैग़म्बर होने के और कुछ भी नहीं , इससे पहले भी बहुत से पैग़म्बर हो चुके हैं इनकी वालिदा एक रास्तबाज़ औरत थीं दोनों मां बेटे खाना खाया करते थे , आप देखिए कि किस तरह हम इनके सामने दलीलें रखते हैं फिर ग़ौर कीजिए कि किस तरह वो फिरे जाते हैं। आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह के सिवा इनकी इबादत करते हो जो ना तुम्हारे किसी नुक़्सान के मालिक हैं ना किसी नफ़ा के , अल्लाह ही ख़ूब सुनने और पूरी तरह जानने वाला है। (अल माइदा 5:75-76)

لَّقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَن يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۗ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿17﴾

यक़ीनन वो लोग काफ़िर हो गए जिन्होंने कहा कि अल्लाह ही मसीह इब्ने मरियम है, आप इनसे कह दीजिए कि अगर अल्ल्ह तआला मसीह बिन मरियम और इसकी वालिदह और रुएज़मीन के सब लोगों को हलाक कर देना चाहे तो कौन है जो अल्लाह तआला पर कुछ भी इख़्तियार रखता हो ? आसमानों व ज़मीन और दोनों के दर्मियान का कुल मुल्क अल्लाह तआला ही है, वो जो चाहता है पैदा करता है , और अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। (अल माइदा 5:17)

وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿17﴾

और अगर ख़ुदा तुम को किसी क़िस्म की तकलीफ पहुचाए तो उसके सिवा कोई उसको दूर करने वाला नहीं है और अगर तुम्हें कुछ फायदा पहुंचाए तो भी (कोई रोक नहीं सकता क्योंकि) वह हर चीज़ पर क़ादिर है (अल अनआम 6:17)

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿40﴾ بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَاءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿41﴾

आप कहिए कि अपना हाल तो बतलाओ कि अगर तुम पर अल्लाह को कोई अज़ाब आ पड़े या तुम पर क़यामत ही आ पहुंचे तो क्या अल्लाह तआला के सिवा किसी और पुकारोगे। अगर तुम सच्चे हो। बल्कि ख़ास उसी को पुकारोगे, फिर जिसको तुम पुकारोगे अगर वो चाहे तो इसको हटा भी दे और जिनको तुम शरीक ठहराते हो इन सबको भूल जाओगे। (अल इनाम 6:40-41)

قُلْ أَنَدْعُو مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿71﴾

आप कह दीजिए कि क्या हम अल्लाह तआला के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारें कि ना वो हमको नफ़ा पहुंचाए और ना हमको नुक़सान पहुंचाए और क्या हम उलटे फिर जाएं इसके बाद के हमको अल्लाह तआला ने हिदायत कर दी, जैसे कोई शख़्स हो इ सको शैतानों ने कहीं जंगल में बेराह कर दिया और वो भटकता हो, इसके कुछ साथी भी हों कि वो इसको ठीक रास्ते की तरफ़ बुला रहे हों कि हमारे पास आ। और हमको ये हुक्म हुआ है कि हम परवरदिगारे आलम के पूरे मुतीअ हो जाएं।(अल अननाम 6:71)

قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ ۚ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿188﴾

आप फ़रमा दीजिए कि मैं ख़ुद अपनी ज़ात ख़ास के लिए किसी नफ़े का इख़्तियार नहीं रखता और ना किसी ज़रर का, मगर इतना ही कि जितना अल्लाह ने चाहा और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता, तो मैं बहुत से मुनाफ़े हासिल कर लेता और कोई नुक़सान मुझ को ना पहुंचता मैं तो

महज़ डराने वाला और बशारत देने वाला हूं उन लोगों को जो ईमान रखते हैं। (अल अराफ़ 7:188)

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ ۖ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿194﴾
أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ قُلِ
ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنظِرُونِ ﴿195﴾ إِنَّ وَلِيِّيَ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ
﴿196﴾ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ ﴿197﴾

वाक़्ये ही तुम अल्लाह को छोड़ कर जिनकी इबादत करते हो वो भी तुम ही जैसे बंदे हैं । सो तुम उनको पुकारो फिर इनको चाहिए कि तुम्हारा कहना कर दें अगर तुम सच्चे हो। क्या इनके पैर हैं जिनसे वो चलते हों या इनके हाथ हैं जिनसे वो किसी चीज़ को तमाम सकें , या इनकी आंखे हैं जिनसे वो देखते हों, या इनके कान हैं जिनसे वो सुनते हैं। आप कह दीजिए! तुम अपने सब शुरका को बुला लो, फिर मेरी ज़ररर रसानी की तदबीर करो फिर मुझको ज़रा मोहलत मत दो। यक़ीनन मेरा परवरदिगार अल्लाह तआला है जिसने ये किताब नाज़िल फ़रमाई और वो नैक बंदों की मदद करता है। और तुम जिन लोगों की अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो वो तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकते और ना वो अपनी मदद कर सकते हैं। (अल अराफ़ 7:194-197)

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ
بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿18﴾

और ये लोग अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जो ना इनको ज़रर पहुंचा सकें और ना इनको नफ़ा पहुंचा सकें और कहते हैं कि ये अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारशी हैं। आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की ख़बर देते हो जो अल्लाह तआला को मालूम नहीं, वह पाक और बरतर है उन लोगों के शिर्क से। (यूनुस 10:18)

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا كُنتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِم بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ
عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنجَيْتَنَا

مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿22﴾ فَلَمَّا أَنجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰ أَنفُسِكُم ۖ مَّتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿23﴾

वो अल्लाह ऐसा है कि तुमको खुश्की और दरिया में चलाता है, यहां तक कि जब तुम कश्ती में होते हो और वो कश्तियां लोगों को मवाफ़िक़ हवा के ज़रिए से लेकर चलती हैं और वो लोग इनसे ख़ुश होते हैं इन पर एक झोंका सख़्त हवा का आता है और हर तरफ़ से इन पर मौजें उठती चली आती हैं और वो समझते हैं कि (बुरे) आ घिरे, (उस वक़्त) सब ख़ालिस एतक़ाद करके अल्लाह ही को पुकारते हैं कि अगर तू हमको इससे बचा ले तो हम ज़रूर शुकर गुज़ार बन जाएंगे। फिर जब अल्लाह तआला इनको बचा लेता है तो फ़ौरन ही वो ज़मीन में नाहक़ सरकशी करने लगते हैं । दुनियावी ज़िंदगी के (चंद) फ़ाइदे हैं, फिर हमारे पास तुमको आना है फिर हम सब तुम्हारा किया हुआ तुमको बतला देंगे। (यूनुस 10:22-23)

وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ فَإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّالِمِينَ ﴿106﴾ وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿107﴾

और अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ की इबादत मत करो जो तुझको ना कोई नफ़ा पहुंचा सके और ना कोई ज़रर पहुंचा सके। फिर अगर ऐसा किया तो तुम इस हालत में ज़ालिमों में से हो जाओगे। और अगर तुमको अल्लाह कोई तकलीफ़ पहुंचाए तो सिवाय उसके और कोई इसको दूर करने वाला नहीं है और अगर वो तुमको कोई ख़ैर पहुंचाना चाहे तो इसके फ़ज़ल का कोई हटाने वाला नहीं, वो अपना फ़ज़ल अपने बंदों में से जिस पर चाहे निछावर कर दे और वो बड़ी मग़्फ़िरत बड़ी रहमत वाला है।(यूनुस 10:106-107)

فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿77﴾ الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ﴿78﴾ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ﴿79﴾ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ ﴿80﴾ وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ ﴿81﴾ وَالَّذِي أَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ﴿82﴾

सिवाय सच्चे अल्लाह तआला के जो तमाम जहान का पालनहार है। जिसने मुझे पैदा किया है और वही मेरी रहबरी फ़रमाता है। वही जो मुझे खिलाता पिलाता है। और जब मैं बीमार पड़ जाऊं तो मुझे शिफ़ा अता फ़रमाता है। और वही मुझे मार डालेगा फिर ज़िंदा कर देगा। और

जिससे उम्मीद बंधी हुई है कि वो रोज़ ए जज़ा में मेरे गुनाहों को बख़्श देगा। (अशशूरा 26:77-82)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ وَإِن يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ﴿73﴾ مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿74﴾

लोगो! एक मिसाल बयान की जा रही है, ज़रा कान लगा कर सुन लो अल्लाह के सिवा जिनको तुम पुकारते रहे हो वो एक मक्खी भी तो पैदा नहीं कर सकते , गो कि सारे के सारे ही जमा हो जाएं, बल्कि अगर मक्खी इनसे को ई चीज़ ले भागे तो ये तो इसे भी उ ससे छीन नहीं सकते, बड़ा कमज़ोर है तलब करने वाला और बड़ा कमज़ोर है वो जिससे तलब किया जा रहा है। इन्होंने अल्लाह के मर्तबे के मुताबिक़ इसकी क़दर जानी ही नहीं , अल्लाह तआला बड़ा ही ज़ोरो कुव्वत वाला और ग़ालिब व ज़बरदस्त है।(अल हज्ज 22:73-74)

أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿62﴾

बेकस की पुकार को जबकि वो पुकारे, कौन क़ुबूल करके सख़्ती को दूर करता है ? और तुम्हें ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाता है , क्या अल्लाह तआला के साथ और माबूद है ? तुम बहुत कम नसीहत व इबरत हासिल करते हो।(अन नमल 27:62)

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِن قِطْمِيرٍ ﴿13﴾

वो रात को दिन और दिन को रात में दाख़िल करता है और चाँद और सूरज को उसी ने काम में लगा दिया है। हर एक मीआद मुअय्यिन पर चल रहा है। यही है अल्लाह तआला , तुम सबका पालने वाला, इसी की सल्तनत है। जिन्हें तुम उसके सिवा पुकारते हो वो तो खजूर की गुठली के छिलके की भी मालिक नहीं। (फ़ातिर 35:13)

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿38﴾

अगर आप इनसे पूछें कि आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया है ? तो यक़ीनन वो यही जवाब देंगे के अल्लाह ने। आप इनसे कहिए कि अच्छा ये तो बताओ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो अगर अल्लाह तआला मुझे नुक़्सान पहुंचाना चाहे तो क्या ये इसके नुक़्सान को हटा सकते हैं? या अल्लाह मुझ पर महरबानी का इरा दा करे तो क्या ये इसकी महरबानी को रोक सकते हैं? आप कह दीजिए कि अल्लाह मुझे काफ़ी है , भरोसा करने वाले उस ही पर भरोसा करते हैं। (अज़्ज़ुमर 39:38)

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴿60﴾

और तुम्हारे रब का फ़रमान (सरज़द हो चुका) है कि मुझसे दुआ करो मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल करूंगा यक़ीन मानो कि जो लोग मेरी इबादत से मुह मोड़ते हैं वो ज़रूर ज़लील होकर जहन्नम में पहुंच जाएंगे।(अल मोमिन 40:60)

قُلْ أَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَاوَاتِ ۖ ائْتُونِي بِكِتَابٍ مِّن قَبْلِ هَٰذَا أَوْ أَثَارَةٍ مِّنْ عِلْمٍ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿4﴾ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُو مِن دُونِ اللَّهِ مَن لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَن دُعَائِهِمْ غَافِلُونَ ﴿5﴾ وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ﴿6﴾

आप कह दीजिए! भला देखो तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो मुझे भी तो दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन का कौनसा टुकड़ा बनाया है या आसमानों में उनका कौन सा हिस्सा है ? अगर तुम सच्चे हो तो इससे पहले ही की कोई किताब या कोई इल्म ही जो नक़्ल किया जाता हो , मेरे पास लाओ। और इससे बढ़कर गुमराह और कौन होगा ? जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पुकारता है जो क़यामत तक इसकी दुआ क़ुबूल ना कर सकें बल्कि इनके पुकारने से महज़

बेख़बर हों। और जब लोगों को जमा किया जाएगा तो ये इनके दुश्मन हो जाएंगे और इनकी परस्तिश से साफ़ इंकार कर जाएंगे। (अल अह्क़ाफ़ 46:4-6)

وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ﴿18﴾ وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿19﴾ قُلْ إِنَّمَا أَدْعُو رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ﴿20﴾ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ﴿21﴾ قُلْ إِنِّي لَن يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَنْ أَجِدَ مِن دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿22﴾

और ये कि मसजिदें सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए ख़ास हैं पस अल्लाह तआला के साथ किसी और को ना पुकारो। और जब अल्लाह का बंदा इसकी इबादत के लिए खड़ा हुआ तो लोग उस पह टूट पड़ने के लिए तैयार थे । आप कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ अपने रब ही को पुकारता हूं और इसके साथ किसी को शरीक नहीं करता। कह दीजिए कि मुझे तुम्हारे किसी नुक़सान नफ़ा का इख़्तियार नहीं। कह दीजिए कि मुझे हरगिज़ कोई अल्लाह से बचा नहीं सकता और मैं हरगिज़ इसके सिवा कोई जाए पनाह भी पा नहीं सकता। (अल जिन्न 72:18-22)

رَّبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ﴿9﴾

मश्रिक़ व मग़्रि ब का परवरदिगार जिसके सिवा कोई माबूद नहीं , तो इसी को अपना कारसाज़ बना लो।(अल मुज़म्मिल 73:9)

वापस लिस्ट पर जाने के लिए यहाँ क्लिक करें

अल्लाह और उसके रसूल के अलावा इस्लाम में कोई और शक्सियत दलील और हुज्जत नहीं है.

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿22﴾

और हमने तो क़ुरान को नसीहत हासिल करने के वास्ते आसान कर दिया, तो कोई है जो नसीहत हासिल करे (अल क़मर 54:22)

كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِّيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿29﴾

ये बाबरकत किताब है जिसे हमने आपकी तरफ़ इसलिए नाज़िल फ़रमाया है कि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर व फ़िक्र करें और अक़्लमंद इससे नसीहत हासिल करें। (साद 48:29)

قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿24﴾

आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारे कुंबे क़बीले और तुम्हारे कमाए हुए माल और वो तिजारत जिसकी कमी से तुम डरते हो और वो हवेलियां जिन्हें तुम पसंद करते हो अगर यह तुम्हें अल्लाह से और इसके रसूल से और इसकी राह में जिहाद से भी ज़्यादा अज़ीज़ हैं, तो तुम इंतिज़ार करो कि अल्लाह तआला अपना अज़ाब ले आए। अल्लाह तआला फ़ासिक़ों को हिदायत नहीं देता। (अत्तौबह 9:24)

قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿31﴾ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿32﴾

कह दीजिए! अगर तुम अल्लाह तआला से मुहब्बत रखते हो तो मेरी ताबेदारी करो, ख़ुद अल्लाह तआला तुमसे मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमा देगा और अल्लाह तआला बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है । कह दीजिए! कि अल्लाह तआला और रसूल की इताअत करो, अगर ये मुंह फैर लें तो बेशक अल्लाह तआला काफ़िरों से मुहब्बत नहीं करता। (आले इमरान 3:31-32)

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿86﴾ أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿87﴾

अल्लाह तआला उन लोगों को कैसे हिदायत देगा जो अपने ईमान लाने और रसूल की सच्चाई की गवाही देने और अपने पास रौशन दलीलें आ जाने के बाद काफ़िर हो जाएं, अल्लाह तआला ऐसे बेइंसाफ़ लोगों को राहेरास्त पर नहीं लाता। इनकी तो यहीं सज़ा है कि इनपर अल्लाह तआला की और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की लानत हो।(आले इमरान 3:86-87)

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿132﴾

और अल्लाह और इसके रसूल की फ़रमांबरदारी करो ताके तुम पर रहम किया जाए।(आलेइमरान 3:132)

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿164﴾

बेशक मोमिनीन पर अल्लाह तआला का बड़ा अहसान है कि इन्ही में से एक रसूल इनमें भेजा, जो इन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है और उन्हें पाक करता है और इन्हें किताब और हिक्मत सिखाता है, यक़ीनन ये सब इससे पहले खुली गुमराही में थे।(आले इमरान 3:164)

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿13﴾ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿14﴾

ये हदें अल्लाह तआला की मुक़र्रर की हुई हैं और जो अल्ला ह तआला की और इसके रसूल की फ़रमां बरदारी करेगा उ से अल्लाह तआला जन्नतों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बह रही हैं जिनमें वो हमेशा रहेंगे और ये बहुत बड़ी कामयाबी है । और जो शख़्स अल्लाह तआला की और

इसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा और इसकी मुक़र्ररह हदों से आगे निकले इसे वो जहन्नम में डाल देगा जिसमें वो हमेशा रहेगा, ऐसों ही के लिए रुस्वाकुन अज़ाब है।(अन निसा 4:13-14)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ ۖ فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿59﴾

ऐ ईमान वालो! फ़रमांबरदारी करो अल्लाह तआला की और फ़रमांबरदारी करो रसूल की और तुम में से इख़्तियार वालों की। फिर अगर किसी चीज़ में इख़्तलाफ़ करो तो इसे लौटाओ, अल्लाह तआला की तरफ़ और रसूल की तरफ़, अगर तुम्हें अल्लाह तआला पर और क़यामत के दिन पर ईमान है। ये बहुत बेहतर है और बाएतबार अंजाम के बहुत अच्छा है। (अन्निसा 4:59)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودًا ﴿61﴾

इनसे जब भी कहा जाता है कि अल्लाह तआला के नाज़िल करदा कलाम की और रसूल की तरफ़ आओ तो आप देख लेंगे कि ये मुनाफ़िक़ आपसे मुंह फैर कर रुक जाते हैं।(अन्निसा 4:61)

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذ ظَّلَمُوا أَنفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ﴿64﴾

हमने हर रसूल को सिर्फ़ इसलिए भेजा कि अल्लाह तआला के हुक्म से उसकी फ़रमां बरदारी की जाए और अगर ये लोग जब इन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया था , तेरी पास आ जाते और इस्तग़फ़ार करते और रसूल भी इनके लिए इस्तग़फ़ार करते, तो यक़ीनन ये लोग अल्लाह तआला को माफ़ करने वाला मेहरबान पाते।(अन्निसा 4:64)

وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ ۚ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ﴿69﴾

और जो भी अल्लाह तआला की और रसूल की फ़रमांबरदारी करे, वो इन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह तआला ने ईनाम किया है, जैसे नबी और सद्दीक़ और शहीद और ने क लोग, ये बहतरीन रफ़ीक़ हैं। (अन्निसा 4:69)

مَّن يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ ۖ وَمَن تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ﴿80﴾

इस रसूल की जो इताअत करे इसी ने अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी की और जो मुंह फैर ले तो हमने आप को कुछ इन पर निगाहबान बना कर नहीं भेजा।(अन्निसा 4:80)

وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿115﴾

जो शख़्स बावजूद राहे हिदायत के वाज़ेह हो जाने के भी रसूल कि मुखालफत करे और तमाम मोमिनों की राह छोड़ कर चले, हम इसे उधर ही मुतावज्जा कर देंगे जिधर वो ख़ुद मुतावज्जा हो और दोज़ख़ में डाल देंगे, वो पहुंचने की बहुत बुरी जगह है। (अन्निसा 4:115)

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿92﴾

और तुम अल्लाह तआला की इताअत करते रहो और रसूल की इताअत करते रहो और एहतियात रखो। अगर नाफ़रमानी करोगे तो ये जान रखो कि हमारे रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुंचा देना है।(अल माइदह 5:92)

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَاصْبِرُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿46﴾

और अल्लाह की और इसके रसूल की फ़रमांबरदारी करते रहो, आपस में इख़्तिलाफ़ ना करो वर्ना बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सब्र रखो, यक़ीनन अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।(अल अंफ़ाल 8:64)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿20﴾

ऐ ईमान वालो! अल्लाह का और इसके रसूल का कहना मा नो और इस (का कहना मानने) से रुगरदानी मत करो सुनते जानते हुए।(अल अंफ़ाल 8:20)

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿157﴾

जो लोग ऐसे रसूल नबी उम्मी का इत्बाअ करते हैं जिनको वो लोग अपने पास तौरात व इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं, वो इनको नेक बातों का हुक्म फ़रमाते हैं और बुरी बातों से मना करते हैं और पाकीज़ा चीजों को हलाल बताते हैं और गंदी चीज़ों को इन पर हराम फ़रमाते हैं और इन लोगों पर जो बोझ और तौक़ थे इनको दूर करते हैं। सो जो लोग इस नबी पर ईमान लाते हैं और इनकी हिमायत करते हैं और इनकी मदद करते हैं और उस नूर का इत्बाअ करते हैं जो इनके साथ भेजा गया है, ऐसे लोग पूरी फ़लाह पाने वाले हैं। (अल अराफ़ 7:157)

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿107﴾

और हमने आपको तमाम जहान वालों के लिए रहमत बनाकर ही भेजा है (अल अम्बिया 21:107)

وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿47﴾

وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم مُّعْرِضُونَ ﴿48﴾

और कहते हैं कि हम अल्लाह तआला और रसूल पर ईमान लाए और फ़रमांब रदार हुए, फिर इन में से एक फ़िरक़ा इसके बाद भी फिर जाता है। ये ईमान वाले हैं (ही) नहीं। जब ये इस बात की तरफ़ बुलाए जाते हैं कि अल्लाह तआला और इसका रसूल इनके झगड़े का फैसला कर दे तो भी इनकी एक जमाअत मुंह मोड़ने वाली बन जाती है।(अन्नूर 24:47-48)

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ

الْمُفْلِحُونَ ﴿51﴾ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللَّهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿52﴾

ईमान वालों का क़ौल तो ये है कि जब इन्हें इसलिए बुलाया जाता है कि अल्लाह तआला और इसका रसूल इनमें फ़ैसला कर दे तो वो कहते हैं कि हमने सुना और मान लिया। यही लोग कामयाब होने वाले हैं। जो भी अल्लाह तआला की, इसके रसूल की फ़रमांबरदारी करें , ख़ौफ़े इलाही रखें और इसके अज़ाबों से डरते रहें, वही निजात पाने वाले हैं।(अन्नूर 24:51-52)

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُم مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ

وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿54﴾

कह दीजिए कि अल्लाह तआला का हुक्म मानो, रसूल अल्लाह की इताअत करो, फिर भी अगर तुमने रुगर्दानी की तो रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ़ वही है जो उ स पर लाज़िम कर दिया गया है और तुम पर उसकी जबावदही है जो तुम पर रखा गया है। हिदायत तो तुम्हें इसी वक़्त मिलेगी जब रसूल की मातहती करो। सुनो रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़ तौर पर पहुंचा देना है। (अन्नूर 24:54)

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿56﴾

नमाज़ की पाबंदी करो, ज़कात अदा करो और अल्लाह ताआला के रसूल की फ़रमांबरदारी में लगे रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (अन्नूर 24:56)

لَّا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُم بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿63﴾

तुम अल्लाह तआला के नबी के बुलाने को ऐसा बुलावा ना कर लो जैसा के आपस में एक दूसरे को होता है। तुममें से उन्हें अल्लाह ख़ूब जानता है जो नज़र बचा कर चुपके से सरक जाते हैं। सुनो जो लोग हुक्मे रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं इन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई ज़बरदस्त आफ़त ना आ पड़े या इन्हें दर्दनाक अज़ाब ना पहुंचे। (अन्नूर 24:63)

لَّقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ﴿21﴾

यक़ीनन तुम्हारे लिए रसूलअल्लाह में उम्दा नमूना (मौजूद) है, हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह तआला की और क़यामत के दिन की तवक़्क़ो रखता है और बकसरत अल्लाह तआला की याद करता है। (अल अहज़ाब 33:21)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَن يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۗ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا ﴿36﴾

और (देखो) अल्लाह और इसके रसूल के फ़ैसले के बाद किसी मोमिन मर्द और औरत को अपने किसी अमर का कोई इख़्तियार बाक़ी नहीं रहता, (याद रखो) अल्लाह तआला और इसके रसूल की जो भी नाफ़रमानी करेगा वो सरीह गुमराही में ही पड़ेगा। (अल अहज़ाब33:36)

مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿40﴾

(लोगो!) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ नहीं लेकिन आप अल्लाह तआला के रसूल हैं और तमाम नबियों के ख़त्म करने वाले , और अल्लाह तआला हर चीज़ का (बख़ूबी) जानने वाला है। (अल अह्ज़ाब 33:40)

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿45﴾ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ﴿46﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿47﴾

ऐ नबी! यक़ीनन हमने ही आप को (रसूल बनाकर) गवाहियां देने वाला, खुशखबरी सुनाने वाला, आगाह करने वाला भेजा है। और अल्लाह तआला के हुक्म से उ सकी तरफ़ बुलाने वाला और रौशन चिराग़। आप मोमिनों की ख़ुश्ख़बरी सुना दीजिए ! कि उनके लिए अल्लाह की तरफ़ से बहुत बड़ा फ़ज़्ल है। (अल अह्ज़ाब 33:45-47)

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿57﴾

जो लोग अल्लाह और इसके रसूल को ऐज़ा देते हैं इन पर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह की फटकार है और इनके लिए निहायत रुस्वाकुन अज़ाब है। (अल अह्ज़ाब 33:57)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ﴿70﴾ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿71﴾

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला से डरो और सीधी सीधी (सच्ची) बातें किया करो। ताकि अल्लाह तआला तुम्हारे काम संवार दे और तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमादे, और जो भी अल्लाह तआला और इसके रसूल की ताबेदारी करेगा इसने बड़ी मुराद पा ली है। (अल अह्ज़ाब 33:70-71)

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿28﴾

हमने आपको तमाम लोगों के लिए ख़ुश्ख़बरियां सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है हां मगर (ये सहीह है) कि लोगों की अक्सरियत को इल्म नहीं है। (अल अह्ज़ाब 33:28)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿32﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ﴿33﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿34﴾

यक़ीनन जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह तआला की राह से लोगों को रोका और रसूल की मुख़ालफ़त की इसके बाद कि इनके लिए हिदायत ज़ाहिर हो चुकी ये हरगिज़ अल्लाह तआला का कुछ नुक़्सान ना करेंगे। अंक़रीब इनके अमाल वो ग़ारत कर देगा। ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल का कहा मानो और अपने अमाल को ग़ारत ना करो। जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह तआला की राह से औरों को रोका फिर कुफ़्र की हालत में ही मर गए (यक़ीनन कर लो) कि अल्लाह तआला इन्हें हरगिज़ ना बख़्शेगा। (मुहम्मद 47:32-34)

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿8﴾ لِّتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿9﴾

यक़ीनन हमने तुझे गवाही देने वाला और ख़ुश्ख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है। (8) ताकि तुम अल्लाह तआ ला और इसके रसूल पर ईमान लाओ औ र उसकी मदद करो और उसका अदब करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करो ।(अल फ़त्ह 48:8-9)

لَّيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَمَن يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿17﴾

अंधे पर कोई हर्ज नहीं है और ना लंगड़े पर कोई हर्ज है और ना बीमार पर कोई हर्ज है , जो कोई अल्लाह और इसके रसूल की फ़रमांबरदारी करे इसे अल्लाह तआला ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिसके (दरख़्तों) तले नहरें जारी हैं । और जो मुंह फ़ेर ले इसे दर्दनाक अज़ाब देगा। (अल फ़त्ह 48:17)

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿28﴾

वही है जिसने अपने रसूल की हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ता कि इसे हर दीन पर ग़ालिब करे, और अल्लाह तआला काफ़ी है गवाही देने वाला।(अल फ़त्ह 48:28)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿1﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿2﴾

ऐ ईमान वा लो! अल्लाह और उसके रसूल से आगे ना बढ़ो और अल्लाह से डरते रहा करो। यक़ीनन अल्लाह तआला सुनने वाला , जानने वाला है। ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें नबी की आवाज़ से ऊपर ना करो और ना उ नसे ऊंची आवाज़ से बात करो जैसे आपस में एक दूसरे से करते हो, कहीं (ऐसा ना हो) तुम्हारे आमाल अकारत जाएं और तुम्हें ख़बर भी ना हो। (अल हुजरात 49:1-2)

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ﴿15﴾

मोमिन तो वो हैं जो अल्लाह पर और इसके रसूल पर (पक्का) ईमान लाएं फिर शक व शुबा ह ना करें और अपने मालों से और अपनी जानों से अल्लाह की राह में जिहाद करते रहें , (अपने दावा ए ईमान में) यही सच्चे और रास्त गो हैं। (अल हुजरात 49:15)

مَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ كَيْ لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنكُمْ ۚ وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانتَهُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿7﴾

बस्तियों वालों का जो (माल) अल्लाह तआला तुम्हारे लड़े भिड़े बग़ैर अपने रसूल के हाथ लगाए वो अल्लाह का है और रसूल का और क़राबत वालों का और यतीमों मिस्किनों का और मुसाफ़िरों का है ताकि तुम्हारे दौलतमंदों के हाथ में ही ये माल गर्दिश करता ना रह जाए औऱ तुम्हें जो कुछ रसूल दे ले लो, और जिससे रोके रुक जाओ और अल्लाह तआला से डरते रहा करो , यक़ीनन अल्लाह तआला सख़्त अज़ाब वाला है।(अल हश्र 59:7)

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿11﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿12﴾

अल्लाह तआला पर और इसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जानों से जिहाद करो। ये तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम में इल्म हो। अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमा देगा और तुम्हें उन जन्नतों में जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और साफ़ सुथरे घरों में जो जन्नत अदन में होंगे, ये बहुत बड़ी कामयाबी है।(अस्सफ़ 61:11-12)

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿2﴾

वही है जिसने ना ख़्वांदह लोगों में इन्ही में से एक रसूल भेजा जो इन्हें उसकी आयतें पढ़ कर सुनाता है और इनको पाक करता है और इन्हें कि ताब व हिक्मत सिखाता है। यक़ीनन ये इससे पहले खुली गुमराही में थे।(अल जुमा 62:2)

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿12﴾

(लोगो) अल्लाह तआला का कहना मानो और रसूल का कहना मानो । पस अगर तुम नाफ़रमानी करो तो हमारे रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुंचा देना है। (अत्तग़ाबुन 64:12)

إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَاتِهِ ۚ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ﴿23﴾

अल्बत्ता (मेरा काम) अल्लाह तआला की बात और इसके पैग़ामात (लोगों को) पहुंचा देना है , (अब) जो भी अल्लाह तआला और इसके रसूल की बात नहीं मानेगा उ सके लिए जहन्नम की आग है जिसमें ऐसे लोग हमेशा रहेंगे। (अल जिन्न 72:23)

वापस लिस्ट पर जाने के लिए यहाँ क्लिक करें